

हुं न.  
५६

सखीहं माधवके निकटजा  
माधवके सेहें ॥ कंदर्पके राजा  
हैं ॥ ना नेंदं कंदर्प गाजाके मन  
में प्रवेश हो विलासकें करि ॥  
कुसुमपत्रवकी प्राज्याविषं  
विलास करि ॥ २ ॥ कोकिलाको  
सोख रहे तुलागो ॥ नाकरिव  
चना मृगप्रगटकरो ॥ बीजु  
रीकी है आभासो मेह सो मि  
लीहि ॥ जलपननें महाउत्तम  
पवित्रसि ज्ञापद विलासक

सि ज्ञा बहु  
प्रहिनं वगी ॥  
नको मनवां छिनदा  
नकालको मनवां छिनदा  
नाहें ॥ ३ ॥ हिकस निमरसि  
जनयनेयीयो ॥ तुमसूकपि  
कसारिकाको किलकंठी ॥  
एसववचनो मृगकसि ॥ हरि  
जेदुःखहर्तानोकोदुःखहरि  
॥ नाको सुखको करि ॥ हे आली  
हं अतिनिगूढरसको प्रगट  
करि ॥ हे इंदीवराक्षी पाकुरको  
बहुनकाल भएहें नैरोध्या

नकरत ॥ अत्र तू प्राप्नो भई हो  
 अत्र तु ह्यारे एक होने मे कह  
 भय करत हो ॥ अत्र स्वक क  
 रो ॥ यह सुंदर नंद नंद ननु  
 रो भाव रूप ॥ गूढ कंदर्प हो ॥  
 हे सरोज मुग्धाक्षी ॥ यह तु  
 ह्यारो भाव रूप गूढ कंदर्प हे  
 सो अंत रने वाहिर प्रगट भ  
 यो हो ॥ किं सो भाव हो ॥ जो अंत  
 को हिरस महारस को मरस  
 सो मित्यो हो ॥ कंदर्प ही प्रगट

भयो हो ॥ या भाव को ना मक्ष  
 ह्यारो ना को तु म आपुने स्वास्  
 न को अपने हृदय में प्राप्त क  
 रो ॥ परम तत्व हो ॥ हीं स रवी ने  
 प्रगट भाव रूप दिखाए ॥ ना  
 पाछे प्रीयाजू कडू क नम्र  
 होत भयो ॥ और निरछे कटा  
 क्षर दि देखे ॥ ना पाछे उदय  
 भ जो मंजीर घृषरु को नाद  
 सो मंजीर नाद ही परमानं  
 दरूप हो ॥ सो ठाकर में प्रवेश

होन भयो ॥ नाने प्रभून को सं  
चे रोम भए ॥ ओर ठा कु र के ग  
जमंदि र भें सु गंध की व पार म  
सरी ॥ ओर भ्रम र आ नंदि न भ  
ए ॥ ७ ॥ ठा कु र के ह र य वि धे र  
क भी या जू हे ॥ ना द स मा ध व को  
दे ख न भई ॥ श्री या जू को प य म  
स मा ग म को आ ग म हो ॥ ना नें  
कुर को सा त्वि क आ वि भि व हो  
जे सें श्री गं गा जी अ प नो पि य  
के सि लि वे को स ह स्र धा ग वं

हे ते सं ठा कु र को सि लि वे को  
श्री या जी के अ ने क अं ग ह ला स  
क र न हो ॥ ठा कु र जी वि धे द्वि या  
जु की क र ण क टा क्ष भ ई ॥ सो  
ठा कु र को अ ने क भा व क रि बु  
द्वि हो न भ ई ॥ १ ॥ ठा कु र के भी न  
र श्री या जू को स्व रू प हो ॥ सो रो भां  
च ज्व र वा हि र प ग द्यो ॥ १ ॥ ठा  
कुर कं द र्प को व क्ष हो ॥ ना नें श्री  
प्रि या जू के नू पुर के ना ह सें  
अ ब्ज क मं च हे ॥ ५ ॥ ण क्ता र मा

७ न. ५८  
त्रही वृक्ष फलिन हो न हो ॥ श्री ध  
या जू को मुख चंद्र हो ॥ ओर ने  
त्ररूपी मी न हो ॥ सो ठाकुर के ह  
इलक लोको अवलं विरह हो ॥ वि  
विधनी लकी आभा ॥ जे सो निरु  
ज वि विधनी लकी आभा ॥ जे सो  
निकुं ज वि वि ध कु सु म सो ॥ स  
ध्या ठाकुर के श्री अंग विषे प्रति  
विं व सहिन ॥ ठाकुर को सेंद र्य  
मी मां देखे ॥ सर्वांग मूर्ति विं ग  
वही प्रगट भयो ॥ मान सर्वांग

विं प्रति देखे प्रिया जू ॥ १३ ॥ श्री  
ठाकुर जी ने आ लिंग न की आ  
संका करी ॥ श्री या जू ने गो रव ना  
वि वि धि पु ष्य वि धे श्री या जू को  
प्रति विं ठाकुर क र न हो ॥ हे आ ल  
याने आ धि क्य र स सर्व स्व कुं आ  
पुनी प्राण पि या को पी निक रि य  
ने महात्म्य प्रगट करे ॥ १४ ॥ श्री या  
जुगल कां म अ भि प्राय करि दे  
ल्या ॥ न व श्री या धा जू की स रवी स  
ह चरी ॥ श्री या जू सो मुख सि का

हुन  
हं

अत्र जायीया जूकी ले करि वाहि  
 र आवन भई ॥ बहु नही काल को  
 भोग्य भुंज को सांचो ॥ ना करि अ  
 पुने पिपको बेग ही अंतरा य  
 रिक सो ॥ और न स्व स्वरूप वा  
 णा करि शकुर को जीनो ॥ आदि  
 वादि ही नो विच स र वी नो ॥ १६ ॥  
 इति श्री सप्तमहंता ससंपूर्ण  
 श्री मीयाजूको अतिभर करिकं  
 दर्प भाव वद्यों ॥ नामें तो लज्या  
 दुरिक शी ॥ तव श्री सा मिनी जी

कुसुम सिज्या पर कटाक्ष कह  
 शी ॥ तव श्री याजू प्रणिशकुर कह  
 रभा ॥ हे का मिनी यह भूमि  
 विषें में दुस्वारे ली ये सुगंधिन  
 सिज्या की रचना की नीहे ॥ ताने  
 विविधि भाव करि विद्या गो ॥ ता  
 सिज्या पर तुम मेरो मनो र शप  
 ण करो ॥ हे मधुर ग्राहक रि अच्युत  
 हसगा मिनी राधे तुह्यारे चरण  
 कमल की अति सय को मरुता  
 सो पुष्प कुसिज्या पर जीने जो

नेपुष्पको जीस्ये चरणकमल  
धरो ॥ पुष्पकों कृपाकरो ॥ ३ ॥  
कुरकहतहै ॥ जो सिज्यापरभे  
हरोही विछायोहै ॥ नापरबिजा  
सकों करो ॥ और आपुनेमाणभ  
तमको अंगसंगकरि सीतलक  
रो ॥ हे प्रिये तुम महाफलवतहै  
मेरे उर विषे धरो ॥ मेरो दुःख  
दिकरो ॥ छुड़ पांढिकारके गहपा  
टकरि ॥ और कामरसके वचनसु  
नाओ ॥ ५ ॥ श्री ठाकुरजी प्रीण

प्रतिकहते ॥ जो मेरो अंगनको  
प्रिकलको संचिनपुन्यपुंज ॥  
आर उगतपयाकरीही गोहपा  
वनोदुर्लभहै ॥ सो मेनुमकों तुम  
आसारूपजो लना नके अंच  
लकरि प्राप्तभई होई ॥ सो महा  
बाक्यकरिकहतहै ॥ सोह मेनु  
ह्यारे अनन्यहै ॥ कस्य अस्मन्  
॥ और तुमही सर्वोत्तमभावकरि  
मेरीही अनन्यहो सो मेनुह्यारे  
ही मिलनार्थ प्रगट भयोहै ॥ ७ ॥

हु.न.  
६२

ओर तुमही मोकोंर निशानस  
खदेवे निमित्त प्रगट भगहो  
तुम तो विचित्रं व करत हो ॥ मे  
ह्या योगे मां च न हो शर सके  
करवा हिर आ व न हो ॥ न हे मु  
श्री प्रिये तु ह्यारे सर्वांग रस  
यहो ॥ नाकों तुम टंको मति ॥ क  
में रूपवंत क हा पुष्प न तें द  
जान हो ॥ हे प्रिये महार स  
नामृत करि भीतर रसना क  
रो ॥ ओर वह न काल को सां

रायो हे मनोरथ ना करि म  
न पूर्ण को ॥ १० ॥ पूर्ण ना कह  
नहें जो अगना दिक करि ॥ न  
कारा दि सिल्कार श्या दि कु  
जन ना दिक ॥ अ प भा ष णा दि  
कके ॥ ओर अने कबंधन करि ॥  
रमण ओर भाव करि ॥ मुसक्या  
नमणि तरणि न ॥ अथ क कुंज  
न नाके जान न वारे टा कु र ही हे  
॥ ते सें करि मोकोंर मा ओ ॥ टा कु  
रजू प्रिया जू प्र नि कह न हो ॥ सा

नरुल सु रननवहो नहे। श्री  
प्रियको परमनत्वरसको परम  
ज्ञानहोइ। नव पूर्णरसको प्राप्  
होनहे। नव श्री याजू श्री यहो नहे  
श्रीर श्री या श्री यहोइ जानहो नहे।  
सुधिनाही रहन एक चहो नहे।  
श्री या जी रति संया मभें अति ध  
रहो। मधुदैत्यके मारन वारो अ  
रमनमथको मथो। एसें ठाक  
रके नरव समूह सों पू जीहो।  
सी श्री या परमा नंद सों भजहो।

शुक्रको रस श्री याजू में आथो  
श्री याजूकों ठाकुरमेंगे संगम  
की रेल भई। सो प्रसिद्ध की रेल भे  
सो सो भाहो न भई। श्री याजूकदा  
क्षरस अगाध समुद्र में डूबो। श्री  
र अलिं गनरस भे मनुहो न भ  
ए। लोह संभार रस कह नहो।  
सो अलोकिक सामर्थ्य सो। १५।  
सो गोपी नाथ रस तो अगाधिर  
सहो। सोको न कहिसके एही जा  
ने। १६। अ व स्वाधीन पति का।

श्री श्री गार्जकोटा कुरनेरमाई  
 सोनाथ श्री गार्जेच्यपनेवस  
 कीने नापनीकहनभशी ॥ १ ॥ जो  
 तुममेरो शृंगारको हेरमण  
 करिमानिकें दिवें या मेरेकें  
 पास विषें वेणी रवी नहोइगई  
 हे। नहां फूलभयो ॥ और मनोह  
 रचंदन और कस्तूरी कीरेण  
 विसगई हे सोरच जाकरो ॥  
 कुरकहनहे हेसरोजाक्षी ॥ ॥  
 ऊपर मुक्ताको चंद्रलोधरो ॥

चंद्रलोकस्तूरीकी आड ऊपर  
 मानो ॥ नौननचंद्रनुसारेभो  
 ज्य ॥ कलसविषंमकरपत्रिका  
 की ॥ नापरनुसारीकमलको  
 लखिविश्रामकरो ॥ १८ ॥ हे मुग्ध  
 श्रीभानिभानिके आभरणकल  
 विषंरचो ॥ कमलके कर्ण फूल  
 करोहे कंदर्पगर्बहरो ॥ १९ ॥ हे  
 विक्रचाबुजास ॥ क्षितादिमुक्त ॥  
 कपोलविषंनुसारीरथामस्वर  
 पकोपनि विषंको मेरो कपोल

सदां व हो ॥ २० ॥ हे अंगना श्रु  
ह्यार संग करि ॥ मिदिग यो अंग  
गग मेरो ॥ ओर मेरे लोचन अंग  
को धूमने लोचन धोइके ॥ आपु  
ने अंगको अंगजनको हेनाथ ॥  
हे अंग आपुने पीतांबर करि मे  
को नीवीकी रचना करो ॥ मेरे क  
दिके विषंनो संवर रिपुको अ  
ति ॥ कदि मेखलाकी रचना को  
करो ॥ २२ ॥ अथ क्रमधुर शब्द  
युक्त दोऊ धंघरु विषं चरण

शो विदिया चरणकी अंगु  
शो विषं करो ॥ प्राण श्री या जो  
श्री राधाजू तिनको अंगार  
करवाओ ॥ अलो किक चम  
ला श्री सिंगार रचनाकी ने  
जो मनहको अंग म्यं हो ॥ २५ ॥  
हे आली मेनो एसें मानन हं  
॥ जो ठाकुर विविधिकंदर्पके  
समस्त स्याई भाव प्रगटक  
विधरे हे ॥ श्री राधाजूके वस  
होइके भावरूप विविधिम

रु.न.  
६६

नोर पही धरे हीं मनोरथके  
समूह की समूह गये हे ॥ २५ ॥  
**इति श्री अष्टमहोलाससंपूर्ण**  
यह जो गधा देवी की बहन काल  
लों सेवा ठाकुर आपु नकी नी ॥  
नाके वसक सिंघी नके भरकरि  
कें ॥ सुमुखी आपु नो सकल रस  
सर्व स्वदेन भी ॥ और श्री माधव  
निवर के कंठ विषें ॥ आपु नो परस  
श्री जोहसा ॥ नाकरि भागसद  
नोर सिंघाग रस रसों सिंघार

सपादनकरि वेंकों ॥ ठाकुर के व  
सहोदकें कहति भई ॥ श्री याजूठा  
कुरयनिकहन भई ॥ जोहे पुरुष  
भूषण तुझारो सिंघार संद चना  
करो ॥ नवठाकुरजी नें कह्यो हे ॥  
मुयाशी मोको बहनका को अ  
भिलाषवांछि नहो ॥ सिंघार मो  
कोंकरो ॥ याप्रकार ठाकुरने कह्यो  
नदनंतर मीयाजूविधि पुष्प  
हीकरि ॥ ऊंचे माथे पर वें एगि तु  
ही ॥ पाछें कर्ण विषें दोऊ चंपाके

वि

विषं कपोल विषं मकर पत्रिक  
 के चित्र करन भई ॥ ना पाके  
 शरि को निरहो होय रेखा  
 आड करि के ॥ तो को आयुने  
 जमुका को निलक करन भई  
 ॥ ३ ॥ ठाकुर जी के नेत्र विषं सख  
 मरेखा अंजन दे न भई ॥ सुगने  
 नी भेषव नायो ॥ सुगने नी भ  
 या जूने आ पुने आ भूषण  
 पहि गार ॥ पोनि आदि ॥ और  
 कुरको सहज मंदहास्य युक्त

सुंदर मुख चंद्रको चंद्र नकसु  
 शिप्रगट युक्त विषं ॥ ४ ॥ प्राणहर्ष  
 शिप्रीनि जो श्री मीया जी निन  
 केरसक मल के स्प शर्नं ठाकुर  
 की रोमावली टाटी होन भई ॥ ५ ॥  
 रस्यल विषं मकर पत्रिका लि  
 खन भई ॥ ६ ॥ ठाकुर के ऊंचे उर  
 स्यल विषं कुचकी रेखा ने उ प  
 जी सोभा ॥ सो दे चिब के मी याजू  
 विस्मय भई ॥ जो राधाजू के भें  
 नवमी याजू पनि सखी कहन भ

ई। मीयाजू कों नसे। मीयाजी  
को नसी यह आ श्रु भयो।  
ना पाछें आपुनी नीवी ठाकुर  
पहिरायक सि। ताऊ पर दुइ  
दिका श्राया मान पहिरावन  
भई।। आपुने दुंधसं ठाकुर  
के चरणर विंद विषें पहिराव  
न भई। और चरण पल्लव  
अंयुं गी विषें विछिया आदि  
हुं पहिरावन भई। और आप  
नेक चहुं कुसके लेप की सोभा

गो भई। चरणर विंद विषें।।  
ताऊ पर महा विरह करि विधि  
नकरत भई। और चरणर वि  
द श्रुति सुकुमार हो। तानें नक  
कारण का यहो न हो। तानें नक  
रत भई।। पापकार त्रैलोक  
की सोंदर्य ना एक चक्रि कों।।  
आनिरा गी हे गो विंद विषें।।  
ताऊ पर गो पसुं दरी भे षर  
चना विषें सो सहज की नाही  
भासत हो। सो गो तु कही हो। श्री

इ.न.  
६८

राधाजूके प्राणसे रहें॥ नाके  
हज आनंदात्मक भासनहें॥  
श्रीप्राजाजूनें सहज गोपसुं  
दरी वेसको एक अंग देख्यो  
नामैही मज होइ पुरसरसभा  
वहो नभयो॥ ना समेंटाकु रभी  
प्राजाजूके कपोलमें स्व रूप  
रसीमें॥ आ पुनो सुंदरी रूप  
को प्रतिबिंब देख्यो॥ ना करि  
टाकु रह अखं नह विन भए॥  
श्रीप्राजाजूको पुरुषादनभा

वर्ण विष्टनाकं टाकु रने वेणी  
ग्रहाकरि चुंबन करत भए॥  
नवताही क्षण विषे कांम भावि  
नऊचो रोम होत भयो॥ १२॥  
पहिले कस्यो जो टाकु रके एक  
अंग देखिके श्रीप्राजासुभ  
ए॥ नावशा भावनें जागरी नि  
भावही भई॥ नवहर्ष करि जो  
शीलजिनह भई॥ मंदहास्य क  
रि विशेषः करि टाकु रको श्री  
मुख चुंबन॥ ना करि ह्यविनन

नुहोइके अनुगक भन करि  
श्री गायत्री कुरपति कहन भ  
ई ॥ १३ ॥ हे माधव तुह्यो सो यह  
गोपसुंदरी बेषको में कहां नहि  
वर्णन करूं ॥ मेरे वचन को श्रे  
र मन को नोगम्य नाहीं ॥ मन  
श्रोतवाणी पंगु भई ॥ प्रत्येक श्रं  
गके असंख्यान को टिसो भा  
के समूह में मर्यादा उलंघन भ  
ई ॥ १४ ॥ श्री गायत्री कह नहे ॥ जो प  
हनु ह्यो सो मुख चंद्र गो न होइ

नो कह नहे ॥ मेरे कुच दीपन क  
संगने कुच श्लेष हो ॥ मेरे  
सूर्य की नाही नो कहा हो ॥ मेरे  
नोचन रूप इंदीवर कमल को  
आनंद हो ॥ नानेक मलह श्रेष्ठ  
नाहीं काहे नें मेरे मुख चंद्र कु  
मलम हो छो हो ॥ जो चंद्र हो तो नो  
भल की कुमुदनी हो न ॥ सो नो  
उध्व रूप हो ॥ या प्रकार को तुह्यो  
गो मुख ॥ कवी स्वरह के मनवच  
नको विषय नाहीं ॥ नो यी गायत्री

कहत है ॥ जो यह में मानत है जो  
मेरो भाग्य को ऊ एक परम भा  
ग्य सीमा पुंजको अति प्राय बहु  
नकालक रिसं चो रास अहु  
भयो ॥ सो अथ प्रगट भयो यह  
त्रिसत्या ॥ मेरो भाग्य राक्षि हो ॥  
नें मो कं प्राण तें पीयत महो हि  
॥ १५ ॥ अथ वा चंद्रमा हो ॥ काहे तें  
मेरो चंद्ररूपी नेन विकारि हो ॥  
अथ वा तुह्या सीवां ली रूप मधु  
के विं व चंद्र न हो ॥ कमल श्रेष्ठ

थको बदन हो ॥ काहे तें जो कमल  
तो मधुकां चंद्र ति हो ॥ सो में जान  
न नाही के अथ वा बदन व्यावरा  
सको सो वर हो ॥ काहे तें जो बद  
न सो वर में नयन रूप हो यक  
मल प्रगट हो तें तें ॥ के अथ वा को  
रुप राथी ॥ अति र्वचनीय सब सिं  
गार मरूप मानो सर्व स्व हो ॥ १६ ॥  
यह सुंदर जुवनी बदन कं मे क  
र महो ॥ जो अहो पुरुष को ऊ ॥ नद  
ने मर श्री गोपिका जी कं मो हो ऊ

हु. न.  
७२

अनुभवमाणसिद्ध अंगकार  
करणो ॥ १७ ॥ प्रीया जू कर न हे न  
मंत्र निज्ञा कर न हे ॥ जो हे प्रीया न  
मनि अयक रि कर न हे ॥ जो प्रस्त  
ह्यारो श्री मुख सों मे रो ह हे श्र  
हिर प्रगट हो न हे ॥ ओ र ना ही न  
ही गो मे रो वेष तु म मे के सें प्र वें स  
हो इ ना नें तु म मे रो सह ज रह हो हें  
न व मो एक ज हो इ ही ॥ तु म ज व तु  
व नी वेष करि ह ल ल नि न वि भं ग  
हो इ रूप क रि म धु र अ य न व

गान करी ॥ न व ही पुरु ष को  
जु व नी भा व स मु इ म र्था दि उ  
हें जु व नी भा व को म नो  
लंघन करि ॥ स्त्री भा व को म नो  
रथ हो न हे ॥ य द्य पि नु ह्या रे जु व  
नी वे स हे ॥ तो ह नु ह्या रे अ पां ग क  
दा क्ष अ नि श य म र्था दि हे ॥ वा ण  
करि मान न हे ॥ ल ज्ञा धी र दू रि  
करि जार न हे ॥ प्री या जू के से हो ॥  
व च न अ मृत को आ धा र हे ॥ नै  
रा कुर को मं द भा व ॥ ओ र मं द हा  
स्य उ प ज्यो न व प्री या जू आ धा

हुं नं  
७३

न होइ कें बेठी ॥ न व ठा कुर रहइ य  
सो ल गा य ली चो ॥ २३ ॥ प्रथम  
की सर वी श्री श्री या जू सो सुं  
होइ ॥ ते सें ठा कुर को र मा व म  
इ ॥ सो पी या मा ध व सो अ ध र  
को आ स व पी व क रि मं द यु न  
भई ॥ सो रा धे ओ र मा ध व सें ऊ  
न की र ति के ल सें दो ऊ पा रो ॥  
सो र ति के ल सें अनु भ व क र  
हो ॥ ता स मे तो सें ना ही जा ना  
ति न को अनु भ व क रि वे धे ॥

न रं न र गो प सुं द री वे स र यो  
हो ॥ सो नी वी फूं दी वो लि क  
रि छु इ दं टिका आ दि जु व नी के  
व म के आ भ र ण वो लि के ओ  
र स क्ष म चा द र पी या जू की ओ टा  
य ॥ श्री क ल वि हा र क र न पी या  
जू के कुर ऊ प र अ दो ला य मा  
न व न मा ला ॥ ओ र ठा कुर की दो  
ऊ भु जा क रि आ लिं गि न ॥ जे सें  
म हा ग ज ग की नां ही अ प ने  
जी व न वि षे अ थ वा जू व नी व

न हंसा विषे ॥ अथ या श्री हंसा  
नभे नवनी न विषे की जाकर  
नहो ॥ २३ ॥ उच्यते नहस्ती जेसें वे  
स्या मर्यादा नो टिके ॥ श्री हंसा वन  
विषे की जाकर नहो ॥ काह गोरनि  
की जा ॥ क हं फल चुनिषो ॥ काह  
सि ज्यार चना ॥ काह मा लको गु  
हिषो ॥ काह अधर मधु पान ॥ का  
ह एक गानह ॥ काह शीया जूके अ  
स पर बाहु ॥ श्री यमु ना जीके  
न विषे ॥ या प्रकार की जाकर नहो

श्री कृष्ण शक्ति नगात्र ॥ उगमगा  
नरा विक्रेत जागरे ॥ आल स  
वलिन विलास सों की जा करन  
॥ एगदस श्री कृष्ण श्री गधिका  
जीको अति सुख को विस्मारी  
आशि बोहे दीनो ॥ २४ ॥ अथ स  
वी परस्पर कर नहो ॥ जोह भंनो  
श्री पीया जूकी रासीहो ॥ विज न  
नीभे याने उपगान भोक्ष ह नहो ॥  
अन्य कह आसका कर नहो ॥ हे  
सह चरा स्वासिनी जूकी यहका

ह.न.  
७५

व्यकथा करिनिश्चय ॥ जो श्रीस्व  
मिनिजीविषे प्रतिफलित भये  
॥ जो पीयाजूने अपनोकीनो प  
रम अनुग्रह ताके बसते हम वि  
षे उनकी काव्यकथा प्रतिफलि  
त होइगी ॥ २५ ॥ ऊपर कथो जो ह  
मको सहा सुख हो ॥ और प्राण  
नाथ पीयाजू हम ऊपर अनुग्र  
ह करो ॥ २६ ॥ प्रथमकी सर्वा  
कहति हे ॥ जो गोपीजनके च  
रण कमल विषे सेवक दासीक

शि॥ इनके प्रेमा मृत में ड विक्रं  
इनके मंदहास्य ने जीते हों॥ अमृत  
त समूह॥ ताकरि निकुंज विषे॥  
शृंगार रस श्रेष्ठ रचना की नी॥  
सो पूर्ण होत भई॥ २७॥ याकारण  
ते भाव बोध में साक्षी भूत हामो  
हरदास॥ चाचा हरिवं ससारिखे  
॥ श्रीगुसाईजी श्रीविठ्ठलेश्वररा  
यजीनें प्रगटकी नोजे ग्रंथ सो  
संपूर्ण भयो॥ २८॥ इति श्रीविठ्ठ  
लेश्वरविरचितं शृंगार रसमं

उन्नं नाम हलासनवमं संपूर्णं  
समाप्तम् ॥ २ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

श्रीकृत्वायनमः ॥ अथ श्रीआ  
चार्यनकोस्वरूपभावलिख्यते

श्रीआचार्यजीकीकृपाबलते

श्रीआचार्यजीकेस्वरूपमेंस

बसंहेहदूरिकरि ॥ जारीतिसों

श्रीआचार्यजीकोध्यानकर

नोसोकहियतुहे ॥ तहांश्रीपूर्ण

पुरुषोत्तमपंचाध्याइमें ॥ हेह

इंदियः प्राण अंतःकरण ॥ जीव